Volume 8, Issue1, (January-March 2020)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

हिन्दी साहित्य में हाशिए पर मजदूर और आदिवासी

ASHOK RATHOD
BAGALORE UNIVERSITY BANGALOR -56
RESARCH STUDENT (DEPARTMENT OF HINDI)

भूमिका

हिन्दी साहित्य में महान साहित्यकारों ने मजदूर और आदिवासिओं को केन्द्र में रखकर अनेक रचनाए लिखे है। उन में से भगवानदास मोरवाल भी एक है जिन्होने मेवात समाज के मजदूर और आदिवासियो का चित्रण बहूत मरम स्पर्शि ढ़ंग से प्रस्तुत किये है। भगवानदास मोरवाल जी के पुर्व भी प्रेमचंद जी के गोदान, फणिश्वरनाथ रेणु जी के मैला आंचल, नागार्गुन के रतिनाथ की चाची, बचलनाम, जैसे उपन्यासो में भी किसान, मजदूरो चित्रण किये गये है। भगवानदास मोतवाल जी के उपन्यास काला पहाड़, बाबल तेरा देश में और नरक मशिहा जैसे उपन्यास में हाशियों पर मजदूर और आदिवाशिओं का चित्रण किये है। हिन्दी साहित्य के छायावादी कवि सुर्यकान्त त्रिपाटी निराजी ने भी मजदूर के बारे किखते है कि,

वह तोड़ती पत्थर;
देखा उसे मैने इलाहाबाद के पथ पर
वह तोड़ती पत्थर।

कोई न छायादार
पेड़ वह जिसके तले बैटी हुई स्वीकार;
श्यामा तन, भर बँधा यौवन,
नत नयन प्रिय, कर्म-रत मन,
गुरु हथौड़ा हाथ,
करती बारा-बार प्रहार

देश मे दल बदल जाते है सरकार बदल जाती मगर देश में मजदूर और आदिवाशियों के स्थितिगती में अभी तक कोई बदलाव देखने को नहीं मिला है अभी तक ओ लोग हाशिएं पर हीं है।

मोरवाल जी के उपन्यास 'काला पहाड़' में लेखक ने मेवात की स्थितिगति का चित्रण बहूर दुखद के साथ लिखते है। मेवाव में पिने का पानी नहीं है, युवा लोग बेरोजगार है, इलाका में नहर नाले का व्यस्था नहीं, किसान मजदूर होते जारहे है किसानो के लिए कोई सिंचाई का व्यवस्था नहीं है। और इलाका में रेल पटरी अभी तक बिचाए नहीं है। इलाका में सुखा-बाढ़ आने से लोग कंगाल हो जाते है और एक-एक कर किसान मजदूर लोग गाँव छोड कर चले जाते है। पलायन से बच्चे और बुढ़े आनाथ हो जाते है। बड़े-बुढ़ो को तो सरकार पेनशन की व्यस्था की है मगर जिसे उनका जीवन निर्वाहण नहीं हो सकता है।

मोरवाल जी के और एक उपन्यास 'नरक मसीहा' गैरसरकारी संगठनो के गतिविधियों पर लिखा गया हिन्दी साहित्य का वह पहला उपन्यास है जो कि पुर्ण रुप से एन.जी.ओ को केन्द्र में रख कर लिखा गया उपन्यास है। जिसमे आदिवासी,स्त्री, मजदूर और दलितो के नाम पर गैरसरकारी संगठनों के शोषण का चोत्रण है।.....

भगवानदास मोरवाल जी काला पहाड़, बाबल तेरा देश में और नरक मसीहा में लेखक हाशिए पर मजदूर और आदिवाशीओं का चित्रण किये है। काला पहाड़ उपन्यास में बारीश न होने के कारण किसान और मजदूर बे रोज़गार हो जाते है। इलाका में हवा में दूल उड़ती नज़र आती है। मजदूर बेरोज़गार हो जाते है। मजदूर लोग एक-एक कर गाँव छोड़ कर जाने लगगते है। गाँव के गाँव खाली हो जाता है। भिषण अकाल से मजदूर कंगाल हो जाते है। सरकार के तरप से मजदूरों को कोई रोजगार की व्यस्था नहीं होती है।

सुखा बाढ़ (अकाल)

मेवात में पिछले कई सालो से बारिश न के बराबर होती है जीसे इलाका के जोहड़ और तालाब सूख चुके है। लगातार आट सालो से सुखा बाड़ लोगों के मन में आतंक पैदा कर देता

है। अगर यहीं स्थिती इसी तरह लगातार आगे बड़ी तो इन्सान जिंदा रहना मुस्किल सा हो जाता है। गाँव में न रोजगार और न सिंचाई का व्यवस्था। किसान, युवाओं और मजदूरों की स्थिति चिंताजन बन जाती है। मेवात एक बेहद गरीबी पिछड़ा हुआ इलाका है। किसानो के खेतों में मटर चना, जौ जैसे फसल पैदा होना बंद हो गए है। जैसे ही गाँव के किसान ही बेरोजगार हो जाते है मजदूरों की स्थिति और चिंताजनक हो जाती है। गांव से एक-एक कर लोग जाने लगते है। मरीराम का बड़ा लड़का बनावारी नगीना छोड़कर दिल्ली चला जाता है। बनवारी गाँव छोड़कर चले जाना सलेमी को अच्छा नहीं लगा है। सलेमी को रहा नहीं गया तो मरीराम से बनवारी दिल्ली जाने का कारण पुछता है।

"सलेमी या गाँओ में रह के कोई भूखो थोड़ेई मरणो है। न कोई रुजगार न धंधा .... लावणी भी अब ना रही.... जब पेट ही भरणो मुसकल हो जाए तो आदमी यही करोगो...।" मरीराम का यह उत्तर सलेमी को हैराण कर देता है। सलेमी हैराण होना ही था क्योंकि लगातार सात-आठ सालों से बारिस न के बराबर हुआ है तो आदमी करेगा भी तो क्या ? गाँवो की स्थिति बहुत चिंताजन है। गाँव में अभी तक कोई रोजगार नहीं निकले है। गाँव में नौकरी न मिलने के कारण बनवारी जैसे अनेक मजदूर लोग गाँव छोड़कर शहर चले जाते है। भूख इन्सान को कहीं न कहीं खिंच ले जाती है। लेखक ने गांव में बसने वाले मजदूरों को का चिंताजनक समस्याओं चित्रण एक अलग अंदाज में चित्रत करते है।

'रामदरश मिश्रा' जी के उपन्यासों में भी मजदूरों के हाशिए का चित्रण मिलजाते है। उनके द्वारा लिखा गया 'आकाश की छत' उपन्यास में मजदूर के बारे में लेखक ने कुछ इस तरह लिखते है कि "इस बाढ़ ने न जाने कितनी जानें ली हैं कितने गांवा तड़पकर डूबे हैं कितने लोगों की जीविका यह छीन लेती है। और भूख से तड़प-तड़पकर मर जाते है। लोग घर छोड़-छोड़कर कलकत्ता भागते है। भागते हैं, घर की बहू-बेटी का गहना ले कर सेठ के यहाँ भागते है , कितने-कितने गंदे काम करने पड़ते हैं, किलने बच्चे बच्चे अनाथ हो जाते हैं, बचपन से ही या तो भिखरी हो जाते है या भारी जुआ उनके कंधों पर रख दिया जाता है। भूख से

अपमान से फटी-फटी आँखें, फटे हुए आँचल फटी हुई धोतियाँ , फाटा हुआ वर्तमान , फटा हुआ भविष्य,फाटा हुआ पूरा जवार ।"

मजदूरो की परिस्थिति कहीं भी जा कर देखते है एक जैसे ही दिखती है । प्रकृतिका रंग-रुप बदलते है । चारो ओर हारियाली खुब सुरत माहोल क्यो न रहे मगर देश में मजदूर के समस्या एक जैसे ही है । मधु कंकरिया जी अपने यात्रा कथा में भी मजदूरों का चित्रण करती है । मजदूर औरते पीठ पर बच्चों को कपड़े बांदकर काम करती नजर आती है । आदिवासीओं के फुले हुए पांव लगातार पत्थर तोड़ते रहते है । लेखिका कहती है कि कहीं भी जाने के बाद भी आम जनता की जिंदगी हर जगह एक सी रहती है ।

इलाका से लोगों का भरोसा उड़ता चलाजाता है । मजदूर लोग को गांव में खाने पिने की समस्या होने लगती है । मेवात में अकाल आ घिर जाने से मेवात में उपझाव होना ही कम हो जाते । महंगाई सिर चड़ बैंट जाती है । मंहगाई के चपठ मे आ कर मजदूरों के चहरे सूख जाते है । मेवात मे आधे से ज्यादा लोग कंगाल हो जाते है । मेवात में मजदूरों की स्थिति गती चिंताजनक बन जाती है । किसान और मजदूरो के लिए कोई रोजगार नहीं । इलाका में किसान की मजदूर बन जाते है मजदूर और भी कंगाल हो जाते है । यह स्थिति केवल मेवाल की ही नहीं है पुरे देश में भी स्थिति आज कुछ ऐसे ही है ।

देश में अमिरी गरीभी में ज़मीन आस्मान जितना फरख आगई है । देश की अर्थिक स्थिति संतुलन पर नहीं है । देश में अमीर लोग अमीर ही बनंते जा रहे है और गरीब बरीब ही बनंते जा रहें है । देश में कहीं भी मजदूरों के लिए आशा कि किरने फुट कर नजर नहीं आ रही है । मेवात में किसानो की स्थिति बहूत नाजूक है । सरकार के पास भी मजदूरों के लिए कोई विकल्प ही नहीं बचा है । सरकार की थोती वादो मजदूरों को हैराण कर दिये है । मेवात में चुनाव से पहले हर पार्टि के नेता सिंचाई का व्यवस्था कर देने की वाइदे कर जाते है। जैसे ही सरकार सत्ता में आती है मजदूरों को किसानो और आदिवासीओं को पाँच साल तक भूल

जाती है। सरकार के तरफ से मजदूरों और आदिवासीओं को जो मदत मिलना है वह अभी तक मिला नहीं है। आग के छपठ में आ कर नगीना में मजदूरों के घर जल जाते है तभी कोई भी सरकार के तरफ से पिड़ीतो को मदत नहीं मिलता है स्थानिय नेता से ले कर विधानसभा के नेता तक नगीना में आ कर जाते है। मगर मजदूरों को किसी को भी मदत नहीं मिलता है। केन्द्र राजनीतिक पार्टी से लेकर राज्य के राजनीतिक पार्टी तक मजदूरों और आदिवासी और किसानों के नाम ले कर ही चुनाव लड़ती आयी है। फिर भी देश के मजदूर, आदिवासी और किसान कंगाल है।

लेखक ने 'नरक मसीहा' नामक उपन्यास में आदिवासीओं का चित्रण बहूत ही दयनीय रुप से चित्रण किये है। आदिवासी सदियों से हासिए पर है। उनके जीवन में कभी परिवर्तन नहीं दिखा है। कोई न कोई समस्या से सादिवासी गुजरते ही आये है। उत्तर प्रदेश में हाली में आदिवासी लोगो का जमीन को कब्जा कर सरकार उनका जमीन हड़प लिए है। जो आदिवासी विरोध करने लगे तो पुलिस उनपर गोली चला देती है। आदिवासीओं को उनका हख उन लोगतक नहीं पहुँछपाती है।

आदिवासी लोगों के समस्या दूर करने के लिए सरकार एनजीओ को सौंप देती है मगर कोई भी एनजीओ आज तक उन आदिवासी का समास्या दूर नहीं किये है। कबीर आदिवासी के नाम पर एनजीओ चलाते है मगर आदिवासीओं का समस्या दूर न कर खुद का समस्या दूर कर लेता है। आदिवासीओं के नाम पर करोड़ पैसे देश-विदेश से आते है सब पैसे हड़प लेता है। कबीर आदिवासीओं को अधिकार दिलाने के लिए एक दांव खेलता है जनांदोलन गरीब आदिवासी और भूविहीन किसानों को उनका हक्क दिलाने के लिए लोगों को इक्कटा कर दिल्ली जाने कि योजना बहूत सिध्दत के साथ तैयार करलेता है। जनाधिकार सत्याग्रह का मुख्य उद्देश आदिवासी और किसानो द्वरा छिनली गयी भूमी को वापस दिलाने का है। जिस के लिए कबीर लाखो लोगों को पैसा दे कर इक्कटा करता है। जनधिकार सात्याग्रह में शामिल होने वालों लोगो केवल एक वक्त की रोटी ड़ालने की योजना बना लेते है। कबीर कहता है

कि " इस जनाधिकार सत्याग्रह में शामिल होने वाले सत्याग्रहियों को केवल एक ही समय, यानी रात को खाना खिलाया जाएगा। दिन-भर ये खाली पेट पदयात्रा करेंगे। कस्बों और शहरो के लोगों से निवेदन करेंगे कि अपनी मर्जि से जो भी संभव हो सके दान में दें। एक आदमी तो हमें ऐसा मिल भी गया है जिसके दस हजार सत्याग्रहियों को खाना खिलाने की जिम्मेदारी ले ली है। वैसे हमें बाहर से भी हर तरह का समर्थन मिल रहा है। फोर्ड फाउंड़शन भी मदद के लिए तैयार हो गया है"

कबीर जो भी नाटक रचा है वह आदिवासीओं के लिए नहीं खुद का स्वार्थ पुर्ण करने के लिए यह रचता है। अपना स्वार्थ साधने के लिए आदिवासीओं को अपने ही हीसाब से उन्हे शोषण करता है। आदिवासीओं को उनका हख दिलाने के लिए झूट मूट का सपना दिखाता है। जैसे-जैसे पद यात्रा दिल्ली की ओर आगे बड़ती जाती है आदिवासी बूखे तरसे कंगाल हो जाते है। कबीर आदिवासी को बीच रास्ते में ही छोड़ कर चला जाता है। सरकार के सामने जो मांगे ले कर पद यात्रा दिल्ली की ओर बढ़ी थी सरकार कबीर के मांगे पुर्ण करदेती है। आदिवासीओं उद्दार करने के लिए सरकार और अन्य संगठन कबीर के एनजीओ को लाखो करोड़ पैसे देने आगे आ जाती है। मगर कबीर उन आदिवासीओं को एक रुपए भी न दे कर सब पैसे खुद ही हझम कर लेता है। जैसा ही कबीर का मकसद पुर्ण हो जाता है गरीब आदिवासीओ को बीच रास्ते में ही भठकने के लिए छोड कर कर चला जाता है। जो आदिवासीओं में से कोई एकाद समझधार थे वह लोग वहीं कहीं अपना ठिकाना लगा लेते है। बाकी के जीतने भी लोग थे रास्ता भूल जाते है और इधर उधर भटक जाते है। बहूत सारे आदिवासी भूख का शिकार बन कर लावारीश लास बन जाते है। जितने भी आदिवासी आदिवासी अपना अस्तित्व खो जाते है। उन्हे पुछने के लिए न मीडीयी आती और न ही कोई मंत्री उन्हे पुछते आते है।

मीड़ीया ऐसी खबरे नहीं छापती है। मिड़िया को पुरसत कहा रहती है कि ऐसी खबरे छापने के लिए। वह तो किसी नेता की छापलूसी और किसी देश विदेश हिरों हिरोईन की

नंगी खबरे छापने और दिखाने में व्यस्त रहती है। सत्याग्रहि को दिल्ली से वापसी को ले कर कबीर कहता है कि " ऐसे आंदोलनों रैलियों या सत्याग्रहो के नाम पर जो व्यक्ति दिल्ली जाने के लिए घर से परिवार के साथ सामान बाँधकर निकलता है, वह क्या वापस लौटेने के लिए निकलता है ?" कबीर अपना स्वार्थ साधने के लिए आदिवासीओं को घर से ले जाते है उन्हे सहीं सलामत वापस लाकर छोड़ना भी अपना जिम्मेधारी नहीं समझते है। कबीर मिड़िया के बारे में कहता है कि "तुम किस मिडिया की बात कर रहीं हो। इससे पहले कितने जनादेश सत्याग्रह, जन सत्यग्रह या मार्च-रैलियों में आने वाले लोगों के बारे तुम्हारे मीडिया ने पूछा है ? मीडिया की दिलचस्पी जनादेश या सत्याग्रहों में नहीं उनमें नाचती-गाती, कूदती-फाँदती, नाटक तमाशा करती भीड़ में होती है। किसी ने आज तक पूछा है कि इन जनादेशों, सत्याग्रहों या पदयात्राओं में आने वाली उस भूखी-प्यासी भीड़ का बाद में क्या होता है ? इनमें से कितने अपने घरों को वापस लौटते हैं कितने बीच रास्ते में इधर-उधर भटक जाते हैं, और कितने इन महानगरों की भीड़ में गुम हो जाते हैं ?" देश की मिड़िया दिशा विहिन होती जा रहीं है। छूपी हुई त्रासधी को दिखाने में असमर्थ है। आज मीड़िया असली विचार को छोड़कर कुछ ऐसी दृश्य दिखाती है कि " मीडिया की दिलचस्पी सत्याग्रह में शामिल होने वाले रंग बिरंगे विदेशी सैलानियों में रहती है... अधनसंगे लोकनृत्यों में रहरी है...शाम को अस्थाई भटिटयों पर चढ़ी कढ़ाइयों से उठटी भाप की खुशबूओं में रहती है... सड़को पर रेंगते विहंगम दृश्यों में रहती है – यानी जब तक रेला, तब तक मेला/जाए भाड़ में कोई अकेला।

एक टी.वी संवादाता ने उन दूल चाटती ठोखरे खाती लुड़कती दुडकती भिड में से एक पैसठ - सत्तर साल की एक आदिवासी स्त्री का नाम जाने की कोशिस करती है जान भी लेती है नाम कांताभाई जो अपने गांव से बिना चप्पल हमने नंगे पांव से अपना हक्क मांगने के लिए पति और अपने बेटा बहू के साथ आई है। जब टी.वी संवादाता कांताभाई को जनधिकार में भाग ले ने की उद्देश के बारे में पूछती है। थकी हारी कांताभाई कहती है कि "हमारी धरती तो छिन गई, अब ये देह को का करें। नेक-नेक करिके मरिबे ते तो अच्छो है कि एक बार मरि

जाबे ।" कबीर के साथ जितने लोग आये है ओ सभी अपना खोये हुए हख को पाने के लिए ही आये थे । उन भोले-भाले लोगों को क्या पता है कि कबीर उनका गरीबी बेचे खाने में तुला हुआ है । और उनको नरक में ड़केले के लिए जा रहा है । सत्याग्रह में जीनते भी गरीब है किसी के पांव में चपन नहीं है । रास्ते पर चल-चर कर उनके पांव में फफूले पड जाते है फिर भी भीना रुके गांधी जी के बजन गाते हुए आगे बड रहे है । कांता भाई के जैसे अनेक लोग सत्याग्रह में भाग लिए है । उनका हालत भी कुछ ऐसा ही है । "तो यह बुजुर्ग कांताबाई जो अपने हक के लिए इस जनाधिकार सत्याग्रह में पैदल चलकर आई है । यही कांताबाई कभी अपने जंगल, जल और जमीन की मालिक थी लेकिन आज इसका सबकुछ छिन गया है । आज यह दाने-दाने को मोहताज है । इस सत्याग्रह में ऐसे कितने है जिनके तन पर कपड़े तो दूर पाँवों में चप्पल तक नहीं हैं...यह देखिए पाँव में फफोले पड़ जाने के बावजूद दिल्ली के लिए कूछ करने वाले इस सत्याग्रहिने हार नहीं मानी है ।" "हजारों तादाद में आए ये सत्याग्रही आपके इस प्रश्न का उत्तर दे सकते हैं। बावजूद इसके मेरा मानना है कि ग्बोबल विलेज की अवधारणावाले इस वर्तमान समय में वैश्वीक स्तर पर काम करना जरुरी है । वैसे भी गांधी विचार केवल भारतीय विचार नहीं है बल्कि उसका एक वैश्वीक संदर्भ है । आज के दौरे में हर चीज के लिए हम केवल सरकार पर नर्भर नहीं रह सकते, कहीं न कहीं से तो मदद लेनी है । इसलिए अगर गरीबी मिटाने के लिए समान विचारों वाले संघठन से धन लिया जाता है, तो इसमें बुराई क्या है । हमें तो केवल धन से मतलब है । वह कहाँ से आता है वह हमारे चिंता का विषय नहीं है । रहीं बात सरकारविरोधी गतिविधियों में इसके इस्तेमाल की, इन दलित-अदिवासियों के हित में कार्य करना यदि सरकारविरोधी गरिविधियाँ हैं, तो ऐसा मैं बार-बार करुँगा ।" कबीर का विचार और एक राजनीतिक चिरार से कोइ कम नहीं है । दलित और आदिवासी लोगो को सामने रखकर एक एसी बडी चंलाग लगाता है कि इसका बनक न जनता को पता चलेगा न और किसी को । पैसे के लिए किसी भी हद तक उतर ने के लिए तैयार हो जाता है । कबीर झूट पर झूट बोले कर सरकार और अन्य संगठन के नज़र में महान बन जाता है । कबीर टी.वी संवादाता के सामने बड़ी-

Volume 8, Issue1, (January-March 2020)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

बड़ी बाते कर जनता के नज़र में महान बन जाता है। जो लोग अपना खोयाहुआ अधिकार पाने के लिए घर से निकलते है खुद ही खो जाते है। भहन भाग्यवती कबीर को मिला कामयाबी के बारे आचार्य जी से बताती है कि "कितने को पता है कि आगरा तक आने वाले असख्य दलित-अदिवासी आज कहाँ हैं वापस अपने-अपने घरों को लौट गए या बड़े शहरों और महानगरों के जन समुद्र में बिला गए?"

उपसंहार

हर वर्ष में एक तारीख को मजदूर दिवस मनाएं जाते है। फिर से मजदूरों को भूल दिया जाता है। मजदूरों को जो तनकाऊ मिलना है वह आज तक नहीं मिल पा रहा है। आठ घंठा काम के जगह पर १२ घंठा काम करवाते है वेतन भी कम देते है। मजदूरों के परिश्रम के अनुसार उन्हे वेतन नहीं मिल रहा है। देश में एक अच्छा कानून लागू कर उन लोगों को उनका हख मिलके के जैसा सुविधा बना कर देना बहूत ही जरुरी है।

देश में भ्रष्टाचार पर नियत्रण पा कर आदिवासी को उन का हख उन्हे दिलाना बहूत हीं महत्व पुर्ण है। आदिवासीओं के नाम पर देश में भ्रष्टाचार बहूत बड़गया है। आज भी आदिवासीओं का समस्या में सुधार न हो के मुख्य कारण ही भ्रष्टाचार है।

Ashok Rathod
Sacred heart girls first grade college,
Jeevan Bhimaanag Bengaluru-75
चेवदम छव.9972978977

संदर्भ सूची ग्रन्थ

१) काला पहाड़

२) आकाश की छत

३) नरक मसीहा